उत्तरशती के साहित्यिक विमर्श

संपादक
डॉ. पूजा तिवारी
ज़िनित सबा

Scanned with CamScanner

उत्तरशती के साहित्यिक विमर्श

संपादक
डॉ. पूजा तिवारी
ज़िनित सबा

NOTION PRESS

Scanned with CamScanner

NOTION PRESS

India. Singapore. Malaysia.

Published by Notion Press 2020
Copyright © Dr. Pooja Tiwari & Zinit Saba 2020

All Rights Reserved.

ISBN 978-1-64951-269-7

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.

The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references ["Content"]. The Content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor. Neither the Publisher nor Editor endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein and do not make any representations or warranties of any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. The Publisher and Editor shall not be liable whatsoever for any errors, omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book.

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

उत्तरशती के मायने... 1

ऋणी हैं... i

1. विमर्श की अवधारणा 1

उत्तरशती के विमर्श के बीच साहित्य की सत्ता के सवाल : प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा 1

विमर्श बनाम अस्मिता विमर्श : डॉ. सुमित पी.वी. 12

विमर्श बनाम आलोचना : डॉ. पिंटू कुमार 23

2. स्त्री विमर्श 29

साहित्य की स्त्री दृष्टि : रोहिणी अग्रवाल 31

समकालीन हिंदी महिला लेखन और यौनिकता का प्रश्न : डॉ. शिल्पी गुप्ता 43

अस्मिता की पहचान में अफ्रो-अमेरिकन स्त्री : सुनीता प्रधान 50

3. दलित विमर्श 57

हिन्दी दलित काव्य लेखन की पार्श्वभूमि : डॉ. सुशीला टाकभौरे 59

दलित राजनीति का संक्षिप्त इतिहास : कँवल भारती 94

दलित विमर्श - वर्तमान परिप्रेक्ष्य : इमरान अंसारी 109

4. आदिवासी विमर्श 117

आदिवासी सौन्दर्य बोध : हरिराम मीणा 119

आदिवासी साहित्य-अवधारणा का सवाल : गंगा सहाय मीणा 133

5. अल्पसंख्यक विमर्श 145

अल्पसंख्यक विमर्श निरर्थक है : अब्दुल बिस्मिल्लाह 147

अल्पसंख्यक विमर्श : ज़िनित सबा 158

अल्पसंख्यक वैचारिकी में मुस्लिम विमर्श : खुशबू 163

6. बाल विमर्श 171

बालसाहित्य कल, आज और कल : दिविक रमेश 173

बालसाहित्य : आवश्यकता एवं महत्ता : डॉ. परशुराम शुक्ल 185

बालसाहित्य : कहानियों के सन्दर्भ में : मनोहर चमोली 'मनु' 199

7. वृद्ध विमर्श 209

वृद्ध विमर्श : परम्परा और आधुनिकता का द्वंद्व : कमलानंद झा 211

8. पर्यावरण विमर्श 219

समकालीन 'हरी कविता' का प्रतिरोधी तेवर : डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत 221

हरित विमर्श की प्रस्तावना : डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा 231

पर्यावरणीय संकट एवं जलवायु परिवर्तन - मानवीय उदासीनता और प्रकृति का प्रकोप : राम अवतार यादव 235

9. समलैंगिक विमर्श 245

हिन्दी सिनेमा में हाशिए की यौनिकता : डॉ. प्रियंका 247

Scanned with CamScanner

समलैंगिकता - मनोवृत्ति का विश्लेषण : साक्षी 260
सेक्स-जेण्डर की अवधारणा : डॉ. एम. फ़ीरोज़ खान/डॉ. मो. शमीम 268
10. किसान विमर्श 277
किसान आत्महत्या और हिंदी उपन्यास: इंद्रदेव शर्मा 279
11. दिव्यांग विमर्श 291
विकलांग विमर्श और अस्मिता का सवाल : शिप्रा शुक्ला 293
12. प्रवासी विमर्श 303
डायस्पोरिक डिस्कोर्स का अवधारणात्मक अवलोकन : डॉ. पूजा तिवारी 305
सम्मिलित लेखकों का संक्षिप्त परिचय 321

Scanned with CamScanner

विकलांग विमर्श और अस्मिता का सवाल : शिप्रा शुक्ला

इक्कीसवीं सदी को विमर्शों की सदी कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी। मानव सभ्यता के विकास में ज्ञान के प्रसार, वैज्ञानिक आविष्कार एवं औद्योगिक क्रांति ने न केवल विकास के नवीन मानदंड स्थापित किए अपितु पूरे विश्व को बौद्धिक स्तर पर चेतना प्रदान कर विचार विमर्श के नए क्षितिज प्रदान किए। ज्ञानोदय के बाद से आधुनिक विचारधाराओं ने अनेक स्तर पर समाज में रहने वाले मनुष्य की समस्याओं पर सोचना और विचार करना आरम्भ किया। 1789 ई. की फ्रांसीसी क्रांति ने समानता, बंधुत्व एवं स्वतंत्रता जैसे मानव मूल्यों की स्थापना कर समाज में एक नई वैचारिक बहस को बलवती बनाया साथ ही साथ सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से शोषित, वंचित वर्गों के भीतर उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा कर विश्व पटल पर एक युगांतरकारी परिवर्तन की लहर पैदा की।

आधुनिक युग में अनेक सामाजिक, राजनीतिक आन्दोलनों ने अस्तित्व में आकर समाज के ऐसे अनेक अनछुए, अनसुलझे सवालों से मुठभेड़ की जिन्हें कुछ विशेष वर्गों द्वारा समाज में हमेशा से दबाया गया। आधुनिकता के मूल्यों ने विमर्श के केंद्र में मनुष्य को स्थापित किया और यही वजह रही कि इस युग में सदियों से शोषित, दमित और तिरस्कृत वर्गों ने मनुष्य का स्वतंत्र दर्जा हासिल करने के उद्देश्य से अनेक मोर्चों पर कवायद शुरू की जिसके अंतर्गत विश्व स्तर पर नारी मुक्ति आन्दोलन, नस्ल एवं रंगभेद के विरुद्ध आन्दोलन उभरे जिन्होंने शताब्दियों से समाज में जड़ जमाई सामंतवादी एवं पितृसत्तात्मक व्यवस्था को खुली चुनौती देकर समाज में अपना स्थान सुनिश्चित करने का ऐतिहासिक प्रयास किया। आधुनिकता के विभिन्न मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उत्तर आधुनिकता का सूत्रपात हुआ इसने आधुनिकतावाद की अनेक मान्यताओं पर अपनी प्रतिक्रिया ज़ाहिर करते हुए विश्व की तमाम समस्याओं को बिल्कुल भिन्न और नवीन दृष्टि से देखना आरम्भ किया। उत्तरआधुनिकतावाद के अंतर्गत सार्वभौमिकता के स्थान पर स्थानीयता को वरीयता मिली, वस्तुनिष्ठता को छोड़कर इसने विषयनिष्ठता पर जोर दिया तथा एकरूपता का स्थान विविधता और अनेकरूपता ने लिया। ऐसे में, जब समस्याओं को सार्वभौमिक दृष्टि से देखने का विरोध करते हुए उन्हें स्थानीय माना

Scanned with CamScanner